

Padma Shri



DR. KAPIL TIWARI

Dr. Kapil Tiwari is an expert on tribal and folk culture, art and oral traditions. He has spent more than thirty years focused on the study, documentation and publication on the above. He is renowned worldwide for his understanding of Indian culture, and has edited more than hundred volumes towards the same.

2. Born on 21st March, 1952, Dr. Tiwari received his Ph.D. in Hindi Literature from Dr. Hari Singh Gaur University, Sagar in 1980. He joined Adivasi Lok Kala Academy, Department of Culture, Government of Madhya Pradesh, Bhopal in 1982 and later went on to become its Director in 1992. He served in the same capacity upto 2011, making major contributions in the documentation of Indian tribal and folk cultures and related oral traditions in his tenure.

3. Dr. Tiwari was a pioneer in publishing 'Choumasa', a quarterly magazine on traditional art forms oral traditions, and went on to publish and edit ninety issues of the magazine. These include several thematic special issues that are considered a mile stone in the study of tribal folk cultures today.

4. Dr. Tiwari identified, encouraged and supported numerous folk artists and writers of folk literature in order to document the extensive folk culture of India. He meticulously planned a format and frame work for the above task, ensuring that the classification of these documentations matched the nature of their content in placement and spirit. He has specialized in the study and collection of folk art forms of 'Ram Katha' and has established the first Ramayan Art Museum, 'Saket', in Orcha, Madhya Pradesh.

5. Dr. Tiwari has played a major role as advisor and board member of various art institutions of the country including Indira Gandhi National Center for Arts, Indian Council for Cultural Relations and in the UNESCO project for conservation of intangible arts. He has also served as a trustee of Bharat Bhawan, Bhopal and as a member of the Madhya Pradesh Sanskriti Parishad.



डॉ. कपिल तिवारी

डॉ. कपिल तिवारी जनजातीय और लोक संस्कृति, कला और मौखिक परंपराओं के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने अपने जीवन के तीस से अधिक वर्ष इनके अध्ययन, प्रलेखन और प्रकाशन पर लगाए हैं। वह भारतीय संस्कृति की जानकारी के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है, और उन्होंने इस पर सौ से अधिक संस्करणों का संपादन किया है।

2. 21 मार्च, 1952 को जन्मे डॉ. तिवारी ने वर्ष 1980 में सागर के डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में पीएच.डी. की। वह वर्ष 1982 में भोपाल, मध्यप्रदेश की आदिवासी लोक कला अकादमी में नियुक्त हुए और बाद में वर्ष 1992 में इसके निदेशक बने। वह वर्ष 2011 तक इसी पद पर कार्य करते रहे और उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान, भारतीय जनजातीय और लोक संस्कृतियों और संबंधित मौखिक परंपराओं के प्रलेखन में प्रमुख योगदान दिया।

3. डॉ. तिवारी ने पारंपरिक कला शैलियों की मौखिक परंपराओं पर एक त्रैमासिक पत्रिका 'चौमासा' के प्रकाशन में अग्रणी भूमिका निभाई और निरंतर पत्रिका के नब्बे संस्करणों को प्रकाशित और संपादित करते रहे। इनमें कई विषयगत विशेष मुद्दे शामिल हैं जिन्हें आज जनजातीय लोक संस्कृतियों के अध्ययन में मील का पत्थर माना जाता है।

4. डॉ. तिवारी ने भारत की व्यापक लोक संस्कृति का विवरण तैयार करने के लिए कई लोक कलाकारों और लोक साहित्य लेखकों की पहचान की, उन्हें प्रोत्साहित किया और उनकी मदद की। उन्होंने खूब लगन से इस कार्य के लिए एक प्रारूप और रूपरेखा तैयार की और यह सुनिश्चित किया कि इन प्रलेखनों का वर्गीकरण स्थान और भाव के सम्बंध में अपनी विषयवस्तु से मेल खाता हो। उन्होंने 'राम कथा' की लोक कला शैलियों के अध्ययन और संग्रह में विशेषज्ञता हासिल की है और मध्य प्रदेश के ओरछा में पहला रामायण कला संग्रहालय, 'साकेत' स्थापित किया है।

5. डॉ. तिवारी ने देश के अनेक कला संस्थानों के सलाहकार और बोर्ड सदस्य के रूप में अहम भूमिका निभाई है, जिनमें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद और अमूर्त कला संरक्षण की यूनेस्को परियोजना शामिल हैं। उन्होंने भारत भवन, भोपाल के ट्रस्टी और मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद के सदस्य के रूप में भी कार्य किया है।